Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 10, Issue 1&2 - 2025, Pg. No. 20-25
Peer Reviewed Journal

Research Article

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियाँ: पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में

पप्पू[1], शुभ्रा पी. कांडपाल [2]

[1]शोधार्थी एवं सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय (बी.एड. विभाग) लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्दूचौड़, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय (बी.एड. विभाग), एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

DOI:https://doi.org/10.24321/2456.0510.202509

I N F O

Corresponding Author:
पप्पू, शिक्षा संकाय (बी.एड. विभाग) लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्दूचौड़, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत |
E-mail Id:
pappusagar7@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009000312287758
How to cite this article:
पप्पू, शुभ्रा पी. कांडपाल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियाँ: पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में, Anu: a, Mul, Int, Jour, *2025*; 10(1&2): 20-25.

Date of Submission: 2025-03-28
Date of Acceptance: 2025-05-10

A B S T R A C T

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक एवं बहुआयामी सुधार का प्रतीक है, जो 34 वर्षों के अंतराल के बाद प्रस्तुत की गई। यह नीति प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (Early Childhood Care and Education – ECCE) को शैक्षणिक विकास की सर्वाधिक संवेदनशील एवं निर्णायक अवस्था के रूप में स्थापित करती है। न्यूरोसाइंटिफिक शोधों के आधार पर नीति स्पष्ट करती है कि 3–8 वर्ष की आयु मस्तिष्क विकास, भाषा अर्जन, सामाजिक-भावनात्मक परिपक्वता तथा संज्ञानात्मक क्षमताओं के निर्माण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण 'स्वर्णिम काल' है (Shonkoff & Phillips, 2000; UNICEF, 2019)।

यह शोध-पत्र NEP-2020 के उन प्रमुख प्रावधानों, दार्शनिक आधारों एवं नीतिगत अंतर्दृष्टियों का विश्लेषण करता है जो पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से संबंधित हैं। 5+3+3+4 पाठ्यक्रम संरचना, Foundational Stage (3–8 वर्ष), खेल-आधारित अधिगम, मातृभाषा-केन्द्रित शिक्षण, आंगनवाड़ी-प्राथमिक विद्यालय समेकन तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता जैसे पहलुओं को समालोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही नीति-क्रियान्वयन में विद्यमान व्यावहारिक चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECCE), 5+3+3+4 संरचना, Foundational Stage, खेल-आधारित शिक्षण, मातृभाषा आधारित अधिगम, शिक्षक प्रशिक्षण।

Copyright (c) 2025: Author(s). Published by Advanced Research Publications

प्रस्तावना

भारत में शिक्षा नीति का इतिहास सदैव सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक आवश्यकताओं तथा राष्ट्रीय विकास की अपेक्षाओं से निर्देशित रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 तथा 1986 (संशोधित 1992) के पश्चात् वर्ष 2020 में भारत सरकार ने NEP-2020 को अनुमोदित किया, जो 21वीं सदी की बहुआयामी चुनौतियों के समाधान हेतु एक दूरदर्शी, लचीली एवं समावेशी नीति के रूप में प्रस्तुत हुई (Ministry of Education, Government of India, 2020) ।

इस नीति की सबसे महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि यह है कि इसने पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को, जो पूर्ववर्ती नीतियों में प्रायः उपेक्षित रही थी, शिक्षा की आधारशिला के रूप में मान्यता प्रदान की है। वैश्विक शोध यह प्रमाणित करता है कि शिशु के जीवन के प्रथम छह वर्ष मस्तिष्क की संरचना, न्यूरल कनेक्शन तथा भावनात्मक-संज्ञानात्मक क्षमताओं के निर्माण की दृष्टि से अत्यंत निर्णायक होते हैं (Bruer, 1999; Center on the Developing Child, Harvard University, 2016) ।

अतः इस शोध-पत्र में NEP-2020 के पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से संबंधित प्रावधानों का विस्तृत एवं शैक्षणिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का महत्व: एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

मस्तिष्क विकास का स्वर्णिम काल

न्यूरोसाइंस के क्षेत्र में किए गए व्यापक शोध यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क का लगभग 85–90% विकास जन्म से 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। इस अवधि में सिनैप्टिक कनेक्शन अत्यंत तीव्र गति से निर्मित होते हैं, जिन्हें 'Sensitive Periods' या 'Critical Windows' कहा जाता है (Shonkoff & Phillips, 2000)। Harvard University के Center on the Developing Child (2016) के अनुसार, प्रारम्भिक अनुभव, स्नेहपूर्ण देखभाल, भाषायी उद्दीपन तथा खेल-आधारित परिवेश मस्तिष्क की संरचनात्मक क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

सामाजिक-भावनात्मक विकास

इस आयु-चरण में बच्चे सहयोग, आत्मनियंत्रण, सहानुभूति, भावनात्मक अभिव्यक्ति एवं सामाजिक व्यवहार के प्रारम्भिक कौशल अर्जित करते हैं। Vygotsky (1978) के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त तथा Erikson (1963) के मनोसामाजिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार, इस चरण में सकारात्मक अनुभव बच्चे के भविष्य के व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य की नींव निर्धारित करते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि एवं School Readiness

OECD (2017) तथा UNESCO (2019) के अध्ययनों ने यह प्रमाणित किया है कि जिन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्राप्त होती है, उनकी प्राथमिक एवं उच्चतर कक्षाओं में शैक्षणिक उपलब्धि, ड्रॉपआउट दर में कमी तथा जीवन कौशल के विकास में उल्लेखनीय सुधार देखा जाता है। Heckman (2006) ने अपने अर्थशास्त्रीय विश्लेषण में सिद्ध किया कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में निवेश का आर्थिक प्रतिफल सर्वाधिक होता है, जो प्रति डॉलर निवेश पर $7–12 की वापसी देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: दार्शनिक आधार एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त

NEP-2020 अनेक शैक्षणिक दार्शनिकों एवं मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों से प्रेरित है। इसका दार्शनिक आधार भारतीय ज्ञान परम्परा, गांधीजी की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा, रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रकृति-केन्द्रित शिक्षा दर्शन तथा आधुनिक रचनावादी सिद्धान्तों (Piaget, 1952; Vygotsky, 1978) पर आधारित है।

नीति के चार मूलभूत स्तम्भ हैं: (1) समग्र विकास (Holistic Development), (2) बहुभाषिकता एवं सांस्कृतिक संरक्षण, (3) समानता एवं समावेश (Equity and Inclusion), तथा (4) अनुभवात्मक एवं बाल-केन्द्रित शिक्षण (Experiential and Child-Centred Learning)। ये सिद्धान्त पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं (Ministry of Education, 2020, pp. 7–11)।

5+3+3+4 पाठ्यक्रम संरचना एवं Foundational Stage

NEP-2020 ने पारम्परिक 10+2 मॉडल को प्रतिस्थापित कर 5+3+3+4 की नवीन संरचना प्रस्तुत की, जो बाल-विकास के मनोवैज्ञानिक चरणों पर आधारित है। इस संरचना के अन्तर्गत प्रथम चरण 'Foundational Stage' (3–8 वर्ष) पूर्णतः पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को समर्पित है।

Foundational Stage में तीन वर्ष की आंगनवाड़ी/पूर्व-प्राथमिक शिक्षा तथा कक्षा 1 एवं 2 (प्राथमिक विद्यालय के प्रथम दो वर्ष) सम्मिलित हैं। इस चरण में खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित तथा कला-एकीकृत शिक्षण को अनिवार्य बनाया गया है। पाठ्यक्रम में बच्चों की भाषायी, गणितीय, वैज्ञानिक जिज्ञासा, सामाजिक-नैतिक समझ तथा शारीरिक विकास को एकीकृत रूप से सम्बोधित किया गया है (Ministry of Education, 2020, pp. 11–16)।

National Curriculum Framework for Foundation Stage (NCF-FS, 2022), जो NEP-2020 के अनुपालन में NCERT द्वारा तैयार किया गया, इस चरण के लिए विस्तृत शैक्षणिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह दस्तावेज़ स्पष्ट करता है कि बच्चों के समग्र विकास हेतु पाँच प्रमुख विकासात्मक लक्ष्य (Developmental Goals) निर्धारित किए गए हैं: शारीरिक विकास, सामाजिक-भावनात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषायी विकास तथा सौन्दर्यबोध एवं सांस्कृतिक विकास (NCERT, 2022)।

NEP-2020 की प्रमुख शैक्षणिक अंतर्दृष्टियाँ

सार्वभौमिक ECCE पहुँच का लक्ष्य

नीति ने 2030 तक 3–6 वर्ष के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह Sustainable Development Goal 4 (SDG-4) के अनुरूप है, जो समावेशी, गुणवत्तापूर्ण एवं सतत शिक्षा की परिकल्पना करता है (UNESCO, 2019) । इस संदर्भ में आंगनवाड़ी केन्द्रों का उन्नयन (Smart Anganwadi) तथा उन्हें प्राथमिक विद्यालयों के साथ क्रियात्मक रूप से जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना है।

खेल-आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण

Froebel (1887) द्वारा प्रवर्तित एवं Piaget (1952) द्वारा सैद्धान्तिक आधार दिए गए खेल-आधारित शिक्षण (Play-Based Learning) को NEP-2020 ने Foundational Stage की मुख्य शैक्षणिक पद्धति के रूप में अपनाया है। नीति विशेष रूप से Toy-Based Pedagogy, Art Integration, Storytelling तथा Nature-Based Learning को बच्चों के रचनात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास के अनिवार्य माध्यम मानती है (Ministry of Education, 2020, p. 10)।

इस दृष्टिकोण से बच्चों में खोज-प्रवृत्ति, समस्या-समाधान, आलोचनात्मक चिंतन तथा सहयोगात्मक व्यवहार का विकास होता है। यह अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) का John Dewey (1938) का सिद्धान्त भी है, जिसके अनुसार 'Learning by Doing' ही वास्तविक शिक्षण है।

मातृभाषा आधारित बहुभाषिक शिक्षण

NEP-2020 की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित अंतर्दृष्टियों में से एक है — कक्षा 5 तक तथा अधिमानतः कक्षा 8 तक मातृभाषा अथवा स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण की अनुशंसा। UNESCO (2016) तथा Cummins (2000) के भाषा शिक्षण शोधों के अनुसार, मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षण बच्चों की संज्ञानात्मक समझ, आत्मविश्वास तथा द्वितीय भाषा-अर्जन क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से सुदृढ़ करता है।

यह प्रावधान भारत की बहुभाषिक विविधता के सन्दर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ सैकड़ों मातृभाषाएँ बोली जाती हैं और बच्चों को कई बार उनकी समझ की भाषा से भिन्न भाषा में शिक्षा दी जाती है, जिससे 'Language Barrier' की गम्भीर समस्या उत्पन्न होती है।

स्वास्थ्य, पोषण एवं शिक्षा का एकीकरण

NEP-2020 ने पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को ICDS (Integrated Child Development Services) कार्यक्रम के साथ संयुक्त करते हुए स्वास्थ्य, पोषण तथा शिक्षा को एकीकृत दृष्टि से देखने की परिकल्पना की है। UNICEF (2019) के अनुसार, कुपोषण और स्वास्थ्य समस्याएँ बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। अतः पोषण, टीकाकरण, स्वच्छता एवं मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना नीतिगत दूरदृष्टि का प्रमाण है।

ECCE शिक्षक प्रशिक्षण

नीति स्वीकार करती है कि भारत में ECCE शिक्षकों की व्यावसायिक योग्यता एवं प्रशिक्षण की स्थिति अत्यंत असमान है। इसलिए NEP-2020 ने 2030 तक सभी ECCE शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिप्लोमा स्तर का विशेष प्रशिक्षण अनिवार्य किया है, जिसमें बाल-विकास, खेल-शिक्षाशास्त्र, भाषा-विकास तथा मूल्यांकन तकनीकें सम्मिलित हों (Ministry of Education, 2020, p. 47)।

Formative Assessment एवं पोर्टफोलियो मूल्यांकन

पारम्परिक परीक्षा-केन्द्रित मूल्यांकन के स्थान पर NEP-2020 ने Foundational Stage के लिए Formative Assessment को प्राथमिकता दी है। इसमें अवलोकन-आधारित मूल्यांकन, बच्चों के कार्य का पोर्टफोलियो, खेल अवलोकन तथा अभिभावकों की सहभागिता से व्यापक विकासात्मक चित्र तैयार करने पर बल दिया गया है। Black & Wiliam (1998) के शोध के अनुसार, Formative Assessment शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है।

तकनीक का सीमित एवं संतुलित उपयोग

नीति डिजिटल प्रौद्योगिकी के शैक्षणिक उपयोग को प्रोत्साहित करती है, जैसे DIKSHA पोर्टल पर ECCE शिक्षण सामग्री, बाल-अनुकूल डिजिटल कहानियाँ तथा इंटरैक्टिव अधिगम उपकरण। परंतु NEP-2020 यह भी स्पष्ट करती है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था में स्क्रीन टाइम को सीमित रखना तथा मानवीय संपर्क, प्राकृतिक परिवेश एवं ठोस वस्तुओं (Manipulatives) के माध्यम से शिक्षण को प्राथमिकता देना आवश्यक है (American Academy of Pediatrics, 2016) ।

नीति-क्रियान्वयन में चुनौतियाँ

NEP-2020 की परिकल्पनाएँ सैद्धान्तिक दृष्टि से अत्यंत प्रगतिशील हैं, परंतु व्यावहारिक क्रियान्वयन में अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियाँ विद्यमान हैं जिन पर गम्भीरता से विचार आवश्यक है।

अवसंरचनात्मक विषमता: देश में आंगनवाड़ी केन्द्रों की भौतिक स्थिति अत्यंत असमान है। ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में अनेक केन्द्रों में पर्याप्त कक्षा-कक्ष, शौचालय, पेयजल तथा शैक्षणिक सामग्री का अभाव है (ASER Report, 2022)।

प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी: ECCE स्तर पर विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यापक कमी है। अधिकांश आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बाल-विकास एवं शैक्षणिक पद्धतियों का व्यावसायिक प्रशिक्षण नहीं प्राप्त है।

बहुभाषिक सामग्री की अनुपलब्धता: भारत में अनेक जनजातीय एवं अल्पसंख्यक भाषाएँ हैं जिनमें ECCE स्तर की शिक्षण सामग्री का निर्माण अभी भी अपर्याप्त है। सामाजिक जागरूकता का अभाव: अनेक परिवारों में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता का अभाव है, विशेषतः ग्रामीण एवं निम्न-आय वर्ग के परिवारों में। वित्तीय संसाधनों की कमी: नीति की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के लिए पर्याप्त बजटीय आवंटन का अभाव एक गम्भीर व्यावहारिक बाधा है (Tilak, 2021) ।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है, जिसने पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को न केवल नीतिगत पहचान दी है, बल्कि उसे सम्पूर्ण शैक्षणिक संरचना का आधार-स्तम्भ घोषित किया है। 5+3+3+4 संरचना के अन्तर्गत Foundational Stage की स्थापना, खेल-आधारित शिक्षण, मातृभाषा में अधिगम, समग्र मूल्यांकन पद्धति तथा ECCE शिक्षक प्रशिक्षण की अनिवार्यता — ये सभी प्रावधान अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं वैज्ञानिक प्रमाणों पर आधारित हैं।

नीति का यह स्पष्ट दृष्टिकोण है कि 'मजबूत प्रारम्भ ही मजबूत राष्ट्र का आधार है।' Heckman (2006) का यह कथन कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था में निवेश सर्वाधिक प्रभावशाली मानव पूंजी निर्माण का माध्यम है, NEP-2020 की ECCE नीति का सार-तत्व भी है।

तथापि, नीति की सफलता के लिए वित्तीय प्रतिबद्धता, शिक्षक प्रशिक्षण की अनवरत प्रक्रिया, बहुभाषिक सामग्री का विकास, अभिभावक-समुदाय की सक्रिय सहभागिता तथा राज्य सरकारों की सुदृढ़ कार्यान्वयन क्षमता अनिवार्य है। यदि ये आधारभूत शर्तें पूरी होती हैं तो NEP-2020 भारत को 21वीं सदी के ज्ञान समाज की दिशा में सुदृढ़ रूप से अग्रसर कर सकती है और प्रत्येक बच्चे को उसकी पूर्ण मानवीय क्षमता विकसित करने का अवसर प्रदान कर सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. American Academy of Pediatrics. (2016). Media and young minds. Pediatrics, 138(5), e20162591. https://doi.org/10.1542/peds.2016-2591
2. ASER Centre. (2022). Annual Status of Education Report 2022. Pratham Education Foundation, New Delhi.
3. Black, P., & Wiliam, D. (1998). Assessment and classroom learning. Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 5(1), 7–74.
4. Bruer, J. T. (1999). The myth of the first three years: A new understanding of early brain development and lifelong learning. Free Press.
5. Center on the Developing Child, Harvard University. (2016). From best practices to breakthrough impacts: A science-based approach to building a more promising future for young children and families. Harvard University.
6. Cummins, J. (2000). Language, power and pedagogy: Bilingual children in the crossfire. Multilingual Matters.
7. Dewey, J. (1938). Experience and education. Macmillan.
8. Erikson, E. H. (1963). Childhood and society (2nd ed.). W. W. Norton.
9. Froebel, F. (1887). The education of man (W. N. Hailmann, Trans.). D. Appleton.
10. Heckman, J. J. (2006). Skill formation and the economics of investing in disadvantaged children. Science, 312(5782), 1900–1902.
11. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Government of India, New Delhi. https://www.education.gov.in
12. NCERT. (2022). National Curriculum Framework for Foundational Stage (NCF-FS). National Council of Educational Research and Training, New Delhi.

13. OECD. (2017). Starting strong 2017: Key OECD indicators on early childhood education and care. OECD Publishing. https://doi.org/10.1787/9789264276116-en
14. Piaget, J. (1952). The origins of intelligence in children. International Universities Press.
15. Shonkoff, J. P., & Phillips, D. A. (Eds.). (2000). From neurons to neighborhoods: The science of early childhood development. National Academy Press.
16. Tilak, J. B. G. (2021). Education policy in India: Issues and perspectives. Journal of Educational Planning and Administration, 35(1), 1–22.
17. UNESCO. (2016). If you don't understand, how can you learn? (Policy Paper 24). UNESCO, Paris.
18. UNESCO. (2019). Early childhood care and education. UNESCO, Paris. https://www.unesco.org/en/education/early-childhood
19. UNICEF. (2019). Early childhood development: The key to a full and productive life. UNICEF, New York.
20. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Harvard University Press.